डॉ0 शिप्रा प्रभा
सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
मगध महिला कॉलेज,पटना
email- gyanshipra31@gmail.com

जयशंकर प्रसाद

कवि–परिचय

जीवन–परिचयः

जयशंकर प्रसाद का जन्म 1889 ई0 में काशी के सराय गोवर्द्धन मोहल्ले के 'सुंघनी साहु' नाम से प्रसिद्ध एक सम्पन्न घराने में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही आरंभ हुई। संस्कृत, हिन्दी, फारसी, और उर्दू के लिए शिक्षक घर पर ही आया करते थे। बाद में इनका नामांकन क्वीन्स कॉलेज में कराया गया किन्तु वहाँ वे आठवीं कक्षा तक ही पढ़ सके।

प्रसाद का जन्म सम्पन्न घराने में हुआ था, किन्तु जीवन–पर्यन्त इन्हें आर्थिक संघर्ष करना पड़ा। इनके बारहवें वर्ष में पिता का, पन्द्रहवें वर्ष में माता का तथा सत्रहवें वर्ष में बड़े भाई का देहांत हो गया जिसके कारण बहुत ही कम उम्र में परिवार की जिम्मेदारी इनके कंधों पर आ गई। इन आघातों को सहते हुए प्रसाद ने दुकान और गृहस्थी को बड़े ही धैर्य और गंभीरता से संभाला। गृहकलह के कारण ये ऋण के बोझ तले दब गये। इन्होंने अपने अध्यवसाय से ऋण चुकाया। इनका अधिकांश जीवन काशी में ही बीता। इन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन में केवल तीन–चार यात्राएँ ही की। यक्ष्मा रोग के कारण इनका देहान्त 15 नवम्बर 1937 ई0 को हो गया।

साहित्यिक यात्रा

प्रसाद के पिता काव्य–प्रेमी थे इसके कारण उनके यहाँ कवियों और विद्वानों का समागम हुआ करता था। निश्चय ही इसका प्रभाव उनकी साहित्यिक चेतना पर पड़ा। प्रसाद को काव्यसृष्टि की प्रेरणा घर पर होनेवाली समस्यापूर्तियों से प्राप्त हुई, जो उस समय विद्वानों की मंडली में प्रचलित थी। प्रारंभ में प्रसाद बड़े भाई से छुप कर कविता लिखा करते थे। यह बात बहुत दिनों तक छिपी न रह सकी। पहले तो बड़े भाई ने डांटा–फटकारा लेकिन जब इसका असर इनपर नहीं हुआ फिर तो उन्होंने प्रसाद को काव्य–लेखन की छूट दे दी। यह प्रचलित है कि नौ वर्ष की अवस्था में ही प्रसाद ने एक सवैया लिखकर अपने गुरू रसमयसिद्ध को दिखाया था। प्रसाद की आरंभिक रचना ब्रजभाषा में है जिसे उन्होंने 'कलाधर' उपनाम से लिखा है।''प्रसाद जी ने जिस समय लिखना आरंभ किया, उस समय तक पिछले कई युगों का प्रभाव बना हुआ था। प्रारंभ में उन्होंने भारतेन्दु हरिश्चंद्र की भाँति पदों की रचना की, रत्नाकर की भाँति कवित्त सवैयों में लिखा, मैथिलीशरण गुप्त की भाँति पौराणिक आख्यान लिए। पुराने विषयों, पुराने छंदों का यह प्रयोग बीस वर्ष की अवस्था तक चलता रहा। धीरे–धीरे उन्होंने अपने को इन प्रभावों से मुक्त कर लिया और भाव, भाषा एवं अभिव्यक्ति के ऐसे नए प्रयोग प्रारंभ किए जिससे हिंदी में एक नए युग का समारंभ हुआ।'' प्रसाद की ही प्रेरणा से उनके भांजे अम्बिकाप्रसाद गुप्त ने 'इन्दु' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन 1909 ई0 में आरम्भ किया, जिसमें प्रसाद नियमित रूप से लिखा करते थे।

प्रमुख रचनाएँ

करुणालय (1913 ई0) :– यह एक काव्य रूपक है, जिसकी कथा वैदिक काल से संबंधित है। इसमें यज्ञ में दी जाने वाली मानव–बलि की निंदा की गयी है और मानव–हृदय में करुणा का संचार कर यह संदेश दिया गया है कि मनुष्य का वास्तविक धर्म मानवता है।

प्रेम–पथिक (1914 ई0) :– यह एक खण्ड–काव्य है, जिसमें किशोर और चमेली की प्रेम–गाथा है। इसमें कवि ने प्रेम–भाव को व्यक्तिगत धरातल से उठाकर विश्व–व्यापी धरातल पर प्रतिष्ठापित किया है। कवि का कहना है कि भावना यदि नारी के सौंदर्य पर टिक जाती है तो मोह है, किन्तु वही सौंदर्य हमें विश्वात्मा की ओर संकेत करता हुआ प्रतीत होता है तो वह प्रेम है।

महाराणा का महत्त्व (1914 ई0) :– यह एक खण्ड–काव्य है जिसका कथानक ऐतिहासिक है। इस कृति में कवि ने युद्ध और नैतिकता का प्रश्न उठाया है। पश्चिमी सभ्यता को नकारते हुए उन्होंने महाराणा प्रताप के माध्यम से भारतीय संस्कृति की गरिमा की रक्षा की है।

चित्राधार (1918 ई0) :– चित्राधार इनकी प्रारंभिक रचनाओं का संकलन है। इसमें कविता, कहानी, नाटक, निबंध सभी का संकलन है। इसमें संकलित कविताओं को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है– पहला कथा–काव्य, जिसकी विषय–वस्तु या तो पौराणिक है या ऐतिहासिक और दूसरी स्फुट रचनाएँ, जो प्रकृति, प्रेम तथा भक्ति से संबंधित है।

कानन–कुसुम(1918 ई0) :– यह गीति–काव्य है, जिसमें कवि के प्रकृति–प्रेम का परिचय मिलता है। इसमें कवि ने अनुभूति और अभिव्यक्ति की नयी दिशाएँ खोजने का प्रयास किया है। इसमें कवि ने विभिन्न ऋतु–वर्णन के साथ फूल, पक्षी, नदी, समुद्र, रात और प्रभात आदि को काव्य–विषय बनाया है।

आँसू (1925 ई0) :– यह एक स्मृति–काव्य है जिसमें प्रेम की अतीत अनुभूतियों को, हृदय की वेदना को व्यक्ति–जीवन की निराशा से ऊपर उठकर विश्व–वेदना और करुणा के विशाल स्तर पर अभिव्यंजित किया गया है। इन पंक्तियों की मार्मिकता द्रष्टव्य है–

‘मादक थी मोहमयी थी, मन बहलाने की क्रीड़ा।

अब हृदय हिला देती है वह मधुर प्रेम की पीड़ा।।’

झरना (1927 ई0) :– यह कवि की पहली रचना है जिसमें छायावाद की प्रवृत्तियाँ दिखाई देती हैं। इसकी अनेक कविताओं में में कवि ने अन्तर्मुखी कल्पना द्वारा सूक्ष्म भावनाओं को व्यक्त करने का प्रयास किया है। वाह्य सौन्दर्य का चित्रण करते हुए भी उन्होंने उसके सूक्ष्म और मानसिक पक्ष को व्यक्त करने की ओर ध्यान दिया है।

लहर (1935 ई0) :– इसमें प्रकृति, प्रणय, करुणा और रहस्यवादी संकेत से युक्त गीत संकलित है। लहर की अनुभूति चिंतन प्रधान है। इसमें शान्ति, गहराई और उज्ज्वलता है।

कामायनी (1936 ई0) :– यह प्रसाद की अन्तिम एवं प्रौढ़ कृति है। इसमें मनु और श्रद्धा के संयोग से मानव–सभ्यता के प्रवर्तन की कथा है। 'कामायनी' में बुद्धिवाद के विरोध में हृदय–तत्त्व की प्रतिष्ठा करते हुए कवि ने शैव–दर्शन के आनन्दवाद को जीवन के पूर्ण उत्कर्ष का साधन माना है। निम्नलिखित पंक्तियाँ द्रष्टव्य है–

समरस थे जड़ या चेतन

सुन्दर साकार बना था,

चेतनता एक विलसती

आनंद अखंड घना था।

मूल्यांकन :–

प्रसाद एक विकासमान व्यक्तित्व के कलाकार है। उनकी आरंभिक रचनाओं में शिथिलता तथा परंपरा का प्रभाव दिखता है। किन्तु प्रसाद ने अनुभूति और शिल्प दोनों ही दिशाओं में जागरूक दृष्टि का परिचय दिया और यही कारण है कि वे 'चित्राधार' जैसी साधारण कृतियों की आरंभिक भूमिका से उठकर 'कामायनी' जैसी महत्त्वपूर्ण रचनाओं तक जा सके।

प्रसाद मुख्य रूप से प्रेम और श्रृंगार के कवि हैं। उन्होंने प्रकृति और नारी–चित्रण से प्रेम का आरंभ कर अलौकिकता की पृष्ठिभूमि तैयार की है। प्रसाद ने अपने जीवन का आदर्श प्रकृति से चुना है। प्रकृति के दर्शन से कहीं उन्हें संगीत और सौंदर्य का आभास होता है तो कहीं जगत की अस्थिरता का चित्र आँखों के समक्ष उपस्थित होता है। प्रकृति का यह चित्र द्रष्टव्य है–

जलधि, मैं न कभी चाहती

कि तुम मुझ पर अनुरक्त हो,

पर मुझे निज वक्ष उदार में

जगह दो, उसमें सुख से रहें।

उन्होंने अपनी रचनाओं में नारी को विशेष स्थान दिया है। नारी को श्रद्धा का रूप मानते हुए प्रसाद ने कहा है–

नारी! तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास–रजत–नग पगतल में।

पीयूष–स्रोत–सी बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में।

इन्होंने वैयक्तिक अनुभूतियों का बड़ी गहराई से चित्रण किया है। राष्ट्र के गौरव और एकता के लिए ऐतिहासिक और पौराणिक आख्यानों को मिलाया है। मानव के विभिन्न पहलुओं को गहराई से देखा–परखा है और सही अर्थों में मानवता को प्रतिष्ठित किया है। 'कामायनी' में मनु को श्रद्धा से कर्मण्यता के द्वारा सतत् उन्नति की प्रेरणा मिलती है। श्रद्धा मनु की निराशात्मक भावना को समाप्त करके निर्माण की दिशा में प्रेरित करते हुए कहती है–

''बनो संसृति के मूल रहस्य,
तुम्हीं से फैलेगी वह बेल।
विश्वभर सौरभ से भर जाय,
सुमन के खेलो सुंदर खेल।

प्रसाद छायावाद के चार स्तंभों में से एक है। छायावाद की जितनी अधिक प्रवृत्तियाँ उनके साहित्य में मिलती हैं, उतनी अन्य किसी में नहीं। अनुभूति की गहनता, लाक्षणिक शैली, गीतिमयता, प्रेमानुभूति, सौन्दर्य–चेतना, कल्पना तत्त्व, सांस्कृतिक भावना, आदर्शवादी दृष्टि, आत्मप्रकाशन के जो गुण छायावादी काव्य में प्रमुखता से प्राप्त हैं, उनका सर्वाधिक प्रतिफलन प्रसाद में ही मिलता है।

प्रसाद का शिल्प–पक्ष उनके व्यक्तित्व की मौलिकता का परिचायक है। प्राजंल–प्रसाद–गुण–युक्त उनकी भाषा कहीं–कहीं भाव परिचालित होने के कारण गद्य में भी कवित्वपूर्ण हो जाती है। शब्दों में लाक्षणिकता का गुण उनकी प्रमुख विशेषता है। शब्द की लक्षणा और व्यंजना शक्तियों का प्रयोग उन्होंने अपनी रचनाओं में प्रमुखता से किया है। अपनी रचनाओं में प्रसाद ने विभिन्न छंदों तथा अंलकारों का प्रयोग किया है। 'आँसू' में आनंद छंद है तो 'कामायनी' का प्रमुख छंद 'ताटंक' है। उनकी कई रचनाएँ अतुकांत भी हैं। रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, प्रतीक आदि अंलकारों का प्रयोग उन्होंने प्रमुखता से किया है।

''प्रसाद के काव्य की प्रमुख विशेषता यह है कि उसमें एक प्रकार का उदात्त स्वर हर कहीं परिव्याप्त है। प्रसाद स्थूलता से सूक्ष्मता की ओर, लौकिकता से अध्यात्म की ओर और शरीर से आत्मा की ओर गए– यह सब तो हुआ ही, लेकिन सबसे बड़ा काम उनके द्वारा यह हुआ कि उन्होंने अपनी समस्त प्रवृत्तियों को अंत में एक महाकाव्य के रूप में अंतर्ग्रथित किया। कामायनी में प्रसाद के

काव्य की समस्त विशेषताओं का सन्निवेश उनके उत्कृष्टतम रूप में हुआ है। कामायनी शताब्दियों में उत्पन्न होने वाले एक प्रतिभाशाली कवि की प्रौढ़तम रचना है। रामचरितमानस, सूरसागर और पद्मावत के समान उसकी गणना भी हिन्दी के गौरव–ग्रंथों में युग–युग तक होती रहेगी।''

सहायक पुस्तक :–

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ0 नगेन्द्र
2. आधुनिक कवि – विश्वम्भर 'मानव', रामकिशोर शर्मा
3. हिन्दी साहित्य कोश – डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा (प्रधान संपादक)
4. हिन्दी भाषा और साहित्य – किरण बाला